Newspaper Clips

November 13, 2011

Hindustan Times ND 13-Nov-11
P-5

Long wait for answer scripts at DU

htFOLLOW-UP

Shaswati Das
shaswati.das@hindustantimes.com

NEW DELHI: Students, who have been seeking disclosure of their answer sheets in Delhi University (DU), have are braving several ordeals.

With the university agitating over the Supreme Court's order through which a student can seek disclosure of his/her answer sheets by filing an RTI, students have to overcome bureaucratic hurdles to get a clearer picture of their actual performance.

"I filed an RTI to get one of my answer scripts in which I had not fared well, while in the other papers I got above 60%. I filed the petition in October and since then I have been told to go from one department to another since no one seems to know what to do," said Seema Patel, a student of DU.

The Central Information Commission (CIC) order states that a student can invoke Section 7 of the RTI Act, following which the university is obliged to provide a copy of the answer script on payment of ₹2 per page along with ₹10 as RTI application fee. However, students who are seeking the facility are being made to wait for months together, before any concrete response is provided.

"I had applied in August and it is only now that I have got my answer scripts. When I got my paper, I realised that it had been randomly checked with some questions not being checked at all. This is absolute carelessness," said Rohit Gulati, a student of law faculty.

While the vice-chancellor declined to comment on the matter, another senior DU official said: "Close to 30 lakh answer scripts are corrected annually and it is a Herculean task to expect this kind of an order will work. It does nothing but overburden the system."

MahaMedha ND 13/11/2011 P9

रुड़की आईआईटी का दीक्षांत समारोह संपन्न

रुड़की (संवाददाता)। द मदर ऑफ इंजीनियरिंग एजुकेशन तथा इंजीनियरों का तीर्थ स्थल कहा जाने वाला भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुड़की ने अपना 11वां वार्षिक दीक्षांत समारोह शनिवार को मनाया। 25 नवंबर 1949 को आर्थिक व सामाजिक उन्नति के द्वारा नवस्वतंत्र भारत की आवश्यकताओं को पूरा करने में अपनी भूमिका को निभाने के उद्देश्य से मुख्य रूप से विज्ञान, इंजीनियरी व प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में अपने प्रयासों व संसाधनों को संकेन्द्रित करने के लिए थॉमसन कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ने अपने एक स्वायत्तशासी विवि बनने हेतु उस समय की संयुक्त प्रांत सरकार से चार्टर प्राप्त किया।

इससे ठीक एक सौ दो वर्ष पहले, इसी तिथि 25 नवंबर 1847 को, देश के लोक निर्माण कार्यों में रोजगार हेतु कार्मिको को प्रशिक्षित किए जाने के उद्देश्य से सैद्धांतिक और व्यवहारिक अनुदेश दिए जाने के लिए डिजाइन किया गया।

रुड़की कॉलेज जिसका नाम बाद में थॉमसन कॉलेज ऑफ सिविल इंजीनियरिंग हुआ को स्थापित किए जाने की पश्चिोत्तर प्रांत की सरकार की अधिसूचना पर हस्ताक्षर किए गए थे। तब इस तरह के संस्थान का भारत में स्थापित किया जाना एक दूरदर्शी, महत्वपूर्ण और अग्रगामी कदम था। यूएसए में पहला इंजीनियरिंग संस्थान जहां1824 में तथा ब्रिटेन में पहला इंजीनियरिंग विवि 1840 में प्रारंभ हुआ। इसे देखते हुए 1847 में भारत में इस संस्थान की स्थापना किया जाना वास्तव में एक ऐतिहासिक कदम था।

अपने 164 वर्ष के इतिहास में इस संस्थान ने इंजीनियरिंग के अनेक रत्न उत्पन्न किए हैं,

संस्थान के रासायनिक इंजीनियरिंग विभाग को विश्व के सर्वोच्च 50 विभागों में से एक माना गया

जिनमें सर गंगाराम, राजा ज्वालाप्रसाद, सर लक्ष्मीपति मिश्रा, डॉ. एएन खोसला, डॉ. घनानन्द पांडे, डॉ. जयकृष्णा, वेद मित्र मेंगलिक, डॉ. आनन्द स्वरूप आर्य, डॉ. एसके खन्ना जैसे अनेकों नाम हैं।

देश की स्वतंत्रता के पश्चात रुड़की विवि के रूप में इस संस्थान का पहला दीक्षांत समारोह, संस्थान के 100 वर्ष पूरे होने के समारोह के साथ 1949 में आयोजित किया गया, जिसमें भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू मुख्य अतिथि थे। संस्थान की उत्कृष्टता की परंपरा वर्तमान में भी जीवित है, जिसका उदाहरण संस्थान के वैकल्पिक जल ऊर्जा केन्द्र हेतु जल विद्युत परियोजनाओं पर लोक सभा की ऊर्जा स्थायी समिति द्वारा अपनी 16वीं रिपोर्ट में की गई यह संस्तुति है कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुड़की का वैकल्पिक जल ऊर्जा केन्द्र लघु जल विद्युत विकास के क्षेत्र में प्रोफेशनल सहायता प्रदान कर रहा है।

संस्थान को देश में लघु जल विद्युत प्रौद्योगिकी के विकास में एक प्रमुख संस्थान की तरह कार्य करते हुए अन्य संस्थानों को मार्ग दिखाना चाहिए। इसके साथ ही संस्थान के रासायनिक इंजीनियरिंग विभाग को क्यू.एस. वर्ल्ड इंजीनियरिंग रैंकिंग 2010 में भारत में प्रथम स्थान दिया गया है तथा विश्व के सर्वोच्च 50 विभागों में से एक माना गया है। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर प्रदीप्त बनर्जी ने हाल ही में 14 अक्टूबर को कार्यभार ग्रहण किया है।

वे सबसे कम उम्र में निदेशक के पद तक पहुंचने वालों में से एक हैं। इस वर्ष से भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुड़की के ग्रेटर नोएडा परिसर में भी शिक्षण कार्य प्रारंभ होने जा रहा, है, अतः इस संस्थान का भविष्य भी इसके विगत तथा वर्तमान की तरह ही उज्जवल प्रतीत होता है।